कर्म • » हमारा कर्म, धर्म को स्थापित करने के लिए होना चाहिए

हमारा हर कर्म हो... धर्म(आत्मा)के आधार पर

ब्र.कु. शिवानी, जीवन प्रबंधन विशेषज्ञा

श्री कृष्ण ऐसा नाम है, ऐसी छवि है जो हर रूप में, हर कला में, हर विद्या में सम्पूर्णता को दर्शाती है। आज के संदर्भ में कृष्ण की हर बात को गहराई में जाकर, अध्यात्म की नज़र से समझने की ज़रूरत है। जिनको बच्चों से प्यार है, वो उन्हें नन्हें से श्रीकृष्ण के रूप में देखते हैं। जिनका निःस्वार्थ प्रेम है, वो राधा-कृष्ण के रूप में देखते हैं। जिनको योद्धा चाहिए वो महाभारत के रूप में देखते हैं। पॉलिटिशियन चाहिए, शासक चाहिए। समाज को जो भी चाहिए वो श्रीकृष्ण की भूमिका में मौजूद है। हम सब आज प्रोफेशनल, परिवार, समाज के स्तर पर कितने सारे रोल प्ले कर रहे हैं। हर रोल में हम परफेक्शन पाना चाहते हैं, जब नहीं आ पाता तो अच्छा अनुभव नहीं करते। श्रीकृष्ण की आत्मा थी ही सोलह कला सम्पूर्ण। इसलिए उनका हर कार्य परफेक्ट होगा। सच तो ये है कि अगर मैं परफेक्ट बन जाऊं तो रोल अपने आप परफेक्ट हो जाएगा।

श्रीकृष्ण ने हर कर्म में धर्म को ऊपर रखा। यहाँ तक कि रिश्तों में भी। यहाँ धर्म का अर्थ है स्वधर्म। शांति, पवित्रता, प्यार, ज्ञान, बुद्धि ये आत्मा का धर्म है। हमारा कर्म, धर्म को स्थापित करने के लिए होना चाहिए। आज हमें अपने आप से पूछना चाहिए कि क्या हमारा कर्म, धर्म को स्थापित करने के लिए होना चाहिए? आज हमें अपने आप से पूछना चाहिए कि क्या हमारा कर्म, धर्म के आधार पर है? हमारे कर्म का उद्देश्य क्या है? हमें क्या रिज़ल्ट चाहिए? अगर हम भी ये कर लें तो हमारे कर्मों के बहुत सारे गुण बदल जाएंगे। वर्तमान समय में सबसे ज़्यादा ज़रूरी है धर्म को समझना। लेकिन हमने उन धार्मिक कर्मकांडों को धर्म मान लिया जो हमें वास्तव में सूट करते थे। प्रार्थना करना, नमाज पढ़ना ये सब एक तरीका है, धर्म को संघटित करने का। उस परमात्मा से जुड़ने का। असल धर्म तो हमारे जीवन के मूल्य हैं। श्रीकृष्ण ने भी हर कदम पर यही तो याद दिलाया। इसीलिए हम उनको कहते हैं - सोलह कला सम्पूर्ण। आज हमें याद दिलाया जाता है कि धर्म को अपने कर्म में इस्तेमाल करो। तो भी हम अनुभव करते हैं कि धर्म के आधार पर कर्म नहीं कर सकते। धर्म का मतलब है - आत्मा का धर्म।

श्रीकृष्ण सतयुग के पहले प्रिंस, सोलह कला सम्पूर्ण देवता हैं। आज हर व्यक्ति कहता है कि नया युग आने वाला है।

श्रीकृष्ण सतयुग के पहले प्रिंस, सोलह कला सम्पूर्ण देवता हैं। आज हर व्यक्ति कहता है कि नया युग आने वाला है। नया युग दिव्यता, डिविनिटी, प्योरिटी का युग अर्थात् श्रीकृष्ण का युग सतयुग है। लेकिन पहले परमात्मा को आना पड़ता है। कृष्ण का हम आह्वान करते हैं तो सिर्फ बाहर से आह्वान नहीं करना है। जन्माष्टमी मतलब उस धर्म को, उस दिव्यता को अपने अंदर आह्वान करना है। ये सिर्फ एक दिन के लिए नहीं, अपनी हर सोच, हर कर्म में श्रीकृष्ण वाले दैवीय गुणों को अपने अंदर जागृत करना है।

एक नई सोच

{ सुखी जीवन }

सुखी जीवन जीने का केवल एक ही रास्ता है। वह है जीवन में सभी मनुष्यों की सिर्फ विशेषताओं की तरफ नज़र डालना।

लेकिन आज हमारी स्थिति यह है कि हमारी नज़र सभी की कमियां या बुराइयां देखने में ही जाती हैं। यही हमारे दुःखों का मूल कारण है।

और दूसरा कारण, जो हमें प्राप्त है उसका आनंद तो लेते नहीं, परन्तु जो प्राप्त नहीं है, उसका चिन्तन करके जीवन को शोकमय बना लेते हैं। तो इन सभी दुःखों का मूल कारण हमारी ज़रूरतें नहीं, इच्छाएं हैं। इसलिए हमेशा याद रखें : - हमारी ज़रूरतें तो पूरी हो सकती हैं, मगर इच्छाएं नहीं।

ये इच्छाएं कभी पूरी नहीं हो सकती और न ही किसी की हुईं आज तक। एक इच्छा पूरी होती है तभी दूसरी खड़ी हो जाती है। इसलिए सभी दुःखों का मूल कारण हमारी इच्छाएं ही हैं।

इसके अलावा हमें संसार में कोई दुःखी नहीं कर सकता, और यदि हम सभी अपने जीवन में सच्चा सुख और शांति प्राप्त करना चाहते हैं तो इच्छा मात्रम अविद्या बनना पड़ेगा।

नई दिल्ली। भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष जे.पी. नड्डा एवं उनकी धर्म पत्नी मलिका नड्डा को रक्षासूत्र बांधने के पश्चात् ईश्वरीय स्मृति चिन्ह भेंट करते हुए जीवन प्रबंधन विशेषज्ञा ब्र.कु. शिवानी दीदी तथा ब्र.कु. प्रकाश भाई,माउण्ट आबू।

गुवाहाटी-असम। माननीय राज्यपाल जगदीश मुखी को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. अल्पना बहन। साथ हैं ब्र.कु. मौसमी।

रायपुर-छ.ग.। रक्षाबंधन के अवसर पर माननीय राज्यपाल अनुसूइया उइके को रक्षासूत्र बांधते हुए क्षेत्रीय निदेशिका ब्र.कु. कमला दीदी। साथ हैं ब्र.कु. सविता बहन।

आसिका-ओडिशा। रक्षाबंधन के अवसर पर आयोजित कार्यक्रम में विधायक श्रीमति मंजुला स्वाईं को रक्षासूत्र बांधते हुए सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. लिली बहन। साथ हैं ब्र.कु. आलोक भाई।

मुम्बई-मलाड। इंडियन नेवी द्वारा रक्षाबंधन कार्यक्रम के लिए ब्रह्माकुमारीज़ को आमंत्रित किया गया। कार्यक्रम में ब्र.कु. कुंती बहन ने रक्षाबंधन का आध्यात्मिक रहस्य स्पष्ट करने के पश्चात् कोमोडोर आर.के. सिंह तथा पूरी टीम को रक्षासूत्र बांधा। ब्र.कु. संजय ने ब्रह्माकुमारी संस्थान का परिचय दिया। इस मौके पर कोमोडोर आर.के. सिंह ने ब्रह्माकुमारीज़ की सराहना की तथा ब्र.कु. कुंती बहन को मोमेन्टो भी प्रदान किया।

मुम्बई-सांताक्रूज़ वेस्ट। प्रसिद्ध गायक सुरेश वाडकर, उनकी धर्मपत्नी श्रीमति पद्मा वाडकर व परिवार को रक्षासूत्र बांधने के पश्चात् ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. विनीता बहन।

अम्बिकापुर-छ.ग.। टी.एस. सिंहदेव,कैबिनेट मंत्री,स्वास्थ्य एवं पंचायत विभाग,छ.ग. शासन को रक्षासूत्र बांधते हुए सरगुजा संभाग की संचालिका ब्र.कु. विद्या दीदी।

डिबरूगढ़-असम। रामेश्वर तेली,मिनिस्टर ऑफ स्टेट फॉर पेट्रोलियम एंड नैचुरल गैस,लेबर एंड एम्प्लॉयमेंट एंड फूड प्रोसेसिंग इंडस्ट्रीज़ को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्रह्माकुमारी बहन।